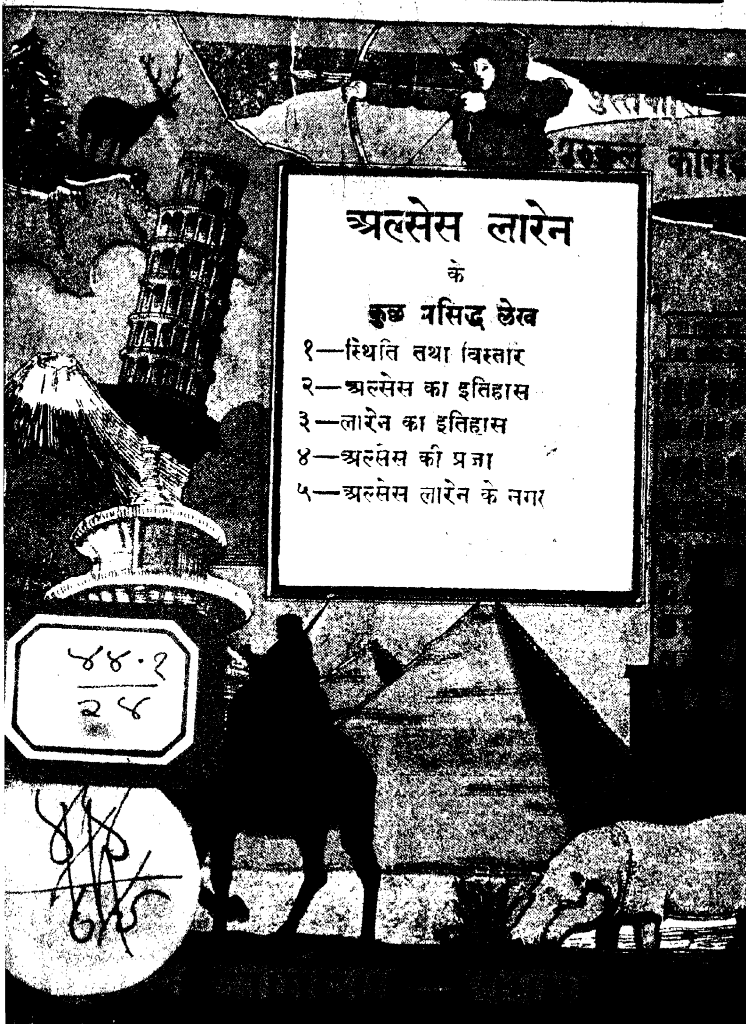
देश दर्शन

अलसेस लारेन



अलसेस लारेन

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

१—स्थिति तथा विस्तार
२—अलसेस का इतिहास
३—लारेन का इतिहास
४—अलसेस की प्रजा
५—अलसेस लारेन के नगर

मई १९४१] [ज्येष्ठ १९९८

देश-दर्शन

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] [संख्या ११

अलसेस लारेन

[illegible]

सम्पादक [illegible]

प्रो० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-	वार्षिक मूल्य	४)
Foreign	Rs. 6/-	विदेश में	६)
This copy	As. -/6/-	इस प्रति का	।=)

विषय-सूची

अल्सेस लारेन

स्थिति तथा विस्तार

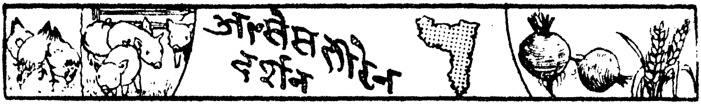
अल्सेस को लैटिन भाषा में अलसासिया कहते हैं। यह जर्मनी और फ्रान्स के बीच में स्थित है। सैकड़ों वर्ष तक यह प्रान्त फ्रान्स तथा जर्मनी के बीच लड़ाई का कारण बना रहा। दोनों देश इस पर अपना अधिकार बताते और लड़ते रहे। यह प्रदेश कभी जर्मनी और कभी फ्रांस के हाथ में रहा। अल्सेस और लारेन दोनों एक दूसरे से स्वतंत्र रहे। यह एक दूसरे के पड़ोसी देश और एक ही राजा के शासन में होने के कारण एक साथ मिल गये फिर भी उनका नाम अल्सेस लारेन रहा।

लारेन प्रान्त अल्सेस के उत्तर में है। उस प्रान्त की मुख्य नदी मोसेल है। मोसेल नदी वोजे पर्वत से निकलती है और उत्तर की ओर बहने के पश्चात् मेज नगर के समीप लारेन प्रान्त में प्रवेश करती है। चालीस मील तक लारेन में प्रवाह करने के पश्चात् अलसेस नदी के शीर्के नगर के आगे प्रान्त को छोड़ती है और राइन नदी

में जा मिलती है। अल्सेस प्रान्त की मुख्य नदी इल है। इल नदी भी राइन नदी की सहायक नदी है। उत्तर की ओर लगभग समस्त प्रान्त की लम्बाई में प्रवाह करने के पश्चात् स्ट्रासबर्ग के समीप इल नदी राइन नदी से जा मिलती है। सार और जोर्न नदियां भी अल्सेस लारेन प्रान्त की हैं। कुछ नदियों को छोड़कर समस्त नदियां राइन नदी की सहायक हैं।

राइन नदी अल्सेस के भूगोल में एक बड़ा महत्व रखती हैं। यह अल्सेस लारेन की पूर्वी सीमा है। वेसेल स्ट्रासबर्ग तक यह नदी सीमा बनाती है। पूर्व की ओर छोड़कर दूसरी किसी ओर भी अलसेस लारेन की सीमा ठीक प्रकार से स्पष्ट नहीं है। पूर्वी जर्मन विजय से यह दोनों प्रदेश फिर जर्मनी के अधिकार में आ गये हैं।

अलसेस लारेन में केवल एक वोजे नामक पर्वत है। यह पर्वत अल्सेस प्रान्त के पश्चिम में है। इस पर्वत की सबसे ऊँची चोटी बलोनड जेबविलेर है। यह बेननेविस से कुछ ही ऊँची है। यह पर्वत उत्तर से दक्षिण की ओर चले गये हैं। उनका कुछ भाग फ्रांस और कुछ भाग अल्सेस में है।



लारेन एक मैदान अथवा एक पठार है जो मोसेल नदी के दोनों ओर स्थित है। पूर्वी भाग पश्चिमी भाग से अधिक बड़ा है। अल्सेस दो भागों में बांटा जा सकता है। पहला पश्चिम की ओर का पर्वतीय भाग है और दूसरा पूर्व में इल नदी के दोनों ओर का मैदान है। १८७१ ई० में जर्मनी ने इसको तीन प्रान्तों में बांटा था। १—अपर अल्सेस, २—लोअर अल्सेस, ३—लारेन।

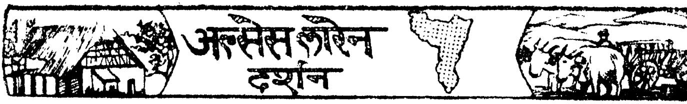
समस्त अल्सेस लारेन देश का क्षेत्रफल ५६०० वर्गमील है। अल्सेस का क्षेत्रफल ३२०० वर्गमील और लारेन का २४०० वर्गमील है। यह क्षेत्रफल वर्तमान समय का है। मध्यकालीन समय में लारेन का देश कहीं अधिक बड़ा था। अल्सेस लारेन देश की सब से बड़ी लम्बाई लैण्ड्स एण्ड से जान ओ ग्रोट्स तक १४५ मील है। और सब से बड़ी चौड़ाई १०५ मील है। एक स्थान पर अल्सेस की चौड़ाई केवल चौबीस मील है। अल्सेस लारेन देश दो बड़े आयताकार लकड़ी के टुकड़ों की भाँति है जो एक दूसरे के ऊपर लम्बाकार रक्खे हैं। लारेन उत्तर पूर्व की ओर और अल्सेस दक्षिण की ओर है।

इस देश की उत्तरी सीमा लम्बी है और वहां

लारेन की सीमा पर लक्सेमबर्ग राज्य तथा दो जर्मन प्रजातंत्र राज्य रेनिश प्रूशा और बवेरियन पैलेटिनेट हैं। पूर्व की ओर बेडेन का जर्मन राज्य और दक्षिणी सीमा पर स्विटज़रलैण्ड का देश है। पश्चिम की ओर म्यूज़, म्यूर्थे एट मोसल और ओस्जेज़ आदि फ्रांस के ज़िले हैं।

अलसेस लारेन देश की जन-संख्या १,६१५,००० है। औसत से प्रत्येक वर्ग मील में २८१ प्राणी निवास करते हैं।

इस देश का मुख्य नगर स्ट्रास बर्ग है। यह नगर अल्सेस में है। स्ट्रास बर्ग की जन-संख्या २ लाख है। मेट्ज़ नगर लारेन में और मुलहाउस तथा काल्मार अल्सेस प्रान्त में हैं। यह समस्त नगर सुन्दर रेलवे लाइन द्वारा एक दूसरे से मिले हुये हैं। देश के अन्दर बहुत सी नहरें हैं जो नदियों को एक दूसरे से मिलाती हैं और नावों को चलाने में सहायक होती हैं। राइन नदी को रोन नदी से मिलाने वाली नहर सब से अधिक प्रसिद्ध है।



अल्सेस का इतिहास

अल्सेस को जर्मनी भाषा में एल्सास कहते हैं जिसका अर्थ इल का देश होता है परन्तु कुछ विशारदों का मत है कि इस देश के निवासी अलेसेसियन्स थे। उन्हीं के नाम पर इस देश का नाम अल्सेस पड़ा।

प्राचीन काल में हिमानी काल के पश्चात् अल्सेस में मनुष्य जाति का प्रचार हुआ था, उस समय वहां पर मैथ (बड़े हाथी) रहा करते थे। उस काल के बड़े हाथियों तथा मनुष्यों की हड्डियां वहां पाई गई हैं परन्तु इन पूर्व ऐतिहासिक मनुष्यों के सम्बन्ध में हमें कुछ अधिक बातें नहीं मालूम हैं।

ईसा से छः सौ वर्ष पूर्व डैन्यूब तथा राइन नदी की घाटियों में केल्टिक जाति के लोग जा बसे थे। यही अल्सेस के प्रथम ऐतिहासिक निवासी थे। यह लोग लम्बे, सुन्दर और स्वस्थ थे। इनका भोजन सुअर का मांस होता था और मदिरा पान किया करते थे। यह बड़े लड़ाकू चतुर रथवाहक तथा घोड़सवार थे।

केल्ट लोगों ने अपनी रक्षा करने के लिये वोज़

पर्वतों पर किले बनाये थे। केल्ट जाति के दो प्रधान भाग हो गये थे। एक को एडवी और दूसरे को सेक्वानी कहते

६० वर्ष ईसा के पूर्व एरिवोविस्टस नामक जर्मन राजा ने अल्सेस पर आक्रमण किया उसने एडवी को पराजय किया और सेक्वानी जाति के दक्षिणी भाग वाली कुछ भूमि पर अधिकार जमाया था।

जर्मन आक्रमण करने वालों का सामना करने के लिये जूलिस सीजर रोमन राजा बुलाया गया। वह उस समय गाल में था। रोमन राजा को सेक्वानी जाति ने बुलाया था। ५८ वर्ष ईसा से पूर्व जूलियस अपनी सेना ले कर वहां गया और अल्सेस के मैदान में उससे और जर्मनों से युद्ध हुआ। जर्मन लोगों की हार हुई। जर्मन राजा अपनी जान छिपा कर भाग गया।

इस विजय के कारण अपर (ऊपरी) अल्सेस रोमन साम्राज्य का एक भाग बना लिया गया था। इसके बाद मेडिवो माट्रीसी जाति को हरा कर लोअर (निचली) अल्सेस पर भी रोमन राजा ने अधिकार जमा लिया

था। रोमन साम्राज्य के अधिकार में अल्सेस लारेन देश लगभग ४५० साल तक रहा।

रोमन लोगों ने अल्सेस का शासन बड़ी सुन्दरता के साथ किया। उन्हों ने उसकी रक्षा भी बड़ी सुन्दरता पूर्वक की। समस्त राइन सीमा में किले बनाये गये थे जिसके कारण जर्मन लोग घुस नहीं सकते थे। स्ट्रासबर्ग का नगर तथा दुर्ग उसी समय बना था। उस समय इसे अर्जेनटेरिटम कहते थे। स्ट्रास बर्ग और मेज़ नगर के मध्य सड़क बनाई गई थी। इसी से बड़े बड़े मार्ग अल्सेस हो कर उत्तर की ओर जाते थे। तीसरी सदी में अल्सेस में ईसाई धर्म का प्रचार हुआ और शीघ्र नगरों के अन्दर ईसाई धर्म के मानने वाले लोग हो गये थे।

तीसरी सदी ई० में रोमन साम्राज्य का ह्रास हो रहा था। कई एक असभ्य जातियां मिलकर अलमानी नाम से एक हो गईं। यह जाति राइन पर अल्मानिया में रहती थी। यह अल्सेस देश के लिये बड़ी भयानक थी। उसके और रोमन जाति के बीच कई लड़ाइयाँ हुईं।

३५३ ई० तक अल्मानी जाति ने बड़ी उन्नति की। उन्होंने स्ट्रासबर्ग पर अधिकार करके अल्सेस के एक बड़े

भाग पर अपना सिक्का जमा लिया। उस समय जूलियन अपोस्टेट रोमन सम्राट था। उसने ३५७ ई० में अलमानी जाति पर धावा किया जो स्ट्रासवर्ग के पास डेरा डाले पड़ी थी। ६००० अल्मानी मारे गये और शेष लोगों ने राइन पार भाग कर अपनी जान बचाई।

जुलियन के कठिन प्रयत्न करने पर भी रोमन लोग अलमानी जाति का सामना अधिक समय तक न कर सके और शीघ्र ही अलमानी जाति का अल्सेस पर फिर अधिकार हो गया।

इसी बीच फ्रैंक जाति ने गाल पर अधिकार जमा लिया और ४६६ ई० में तॉल्बियाक नामक स्थान पर फ्रैंक और अलमानी जाति का सामना हुआ। फ्रैंक जाति को सफलता प्राप्त हुई परन्तु अलमानी जाति स्वतंत्र बनी रही। ५३६ ई० में फ्रैंक राजा की प्रजा बन गई।

५३६ ई० में अल्सेस फ्रैंक साम्राज्य का भाग बन गया। उस समय वहां पर अधिकांश लोग केल्ट जाति के ही थे। अल्सेस आस्ट्रेलिया राज्य में मिला लिया

गया था। अल्सेस में उच्च वर्ग के ड्यूक लोग शासन करते थे। अल्सेस उत्तरी तथा दक्षिणी दो भागों में बांट दिया गया और वहां पर बहुत से ईसाई गिरजाघर तथा मठ बन गये।

आगे चलकर ड्यूक लोगों का अंत हो गया और अल्सेस में लार्ड लोग अधिक स्वतंत्र हो गये।

८०० ई० में चार्लमेन ने अपने राज्य को साम्राज्य बनाया। उसने अपने साम्राज्य का नाम होली रोमन साम्राज्य रक्खा। अल्सेस साम्राज्य का एक भाग १८०६ ई० तक बना रहा। चार्लमेन के समय में अल्सेस प्रान्त के निवासियों ने बड़ी उन्नति की।

चार्लमेन के पुत्र लूई के मरने पर अल्सेस उसके बड़े पुत्र लोथियर के हाथ में आया। उसकी मृत्यु के पश्चात् अल्सेस उसके दूसरे पुत्र लोथियर के अधिकार में गया और उसके नाम के साम्राज्य रेगनम लोथारी का भाग बना रहा। लोथारी बिगड़ कर बाद को लारेन हो गया।

८६९ ई० में लोथियर मरा। उसके मरने पर उसके पुत्र चार्ल्स वाल्ड और लूई जर्मन दोनों अपना अपना

अधिकार अल्सेस पर करना चाहते थे। दोनों भाइयों की भाषा भिन्न थी इसलिये उन्होंने साम्राज्य के दो भाग कर डाले। पूर्वी फ्रैंक साम्राज्य का लूई जर्मन और पश्चिमी फ्रैंक (फ्रांसीसी) का राजा चार्ल्स बाल्ड हुआ।

८६६ ई० में अल्सेस के बारे में झगड़ा हुआ कि वह फ्रांस का या जर्मनी का होना चाहिये। ८७० ई० में मेरसेन की संधि के अनुसार अल्सेस जर्मनी को दिया गया। लूई के मरने पर कुछ समय तक अल्सेस पर फ्रांस का अधिकार रहा परन्तु जर्मन राजा आर्नफ ने उस पर फिर अधिकार जमा लिया।

जब जर्मनी पांच भागों में बँटा तो अल्सेस स्वाबिया प्रान्त में मिला दिया गया। १२६८ ई० तक स्वाबिया के ड्यूक अल्सेस के ड्यूक बने रहे। १३८४ ई० से १६३८ ई० तक लोअर अल्सेस पर स्ट्रासबर्ग के पादरी का अधिकार रहा।

अल्सेस के नगर निवासी लोग स्ट्रासबर्ग के पादरी अथवा हैप्सबर्ग के काउन्ट के अधिकार में रहना नहीं चाहते थे। कोलमार, मुलहाउस, स्कूल्टाट बीसेमबर्ग आदि दस नगरों ने प्रतिनिधियों को बुलाया और उनका

प्रबन्ध करने के लिये एक कर्मचारी नियत किया। स्ट्रासबर्ग सबसे बड़ा नगर था वहाँ का शासन राजा के अधिकार में ही था।

यह दसों नगर स्वतंत्र रहे और अपना कार्य स्वयम् देखते रहे। राजा को वह कर दे देते थे और युद्ध के समय सैनिक देते थे।

१४४४ ई० में अल्सेस के अधिकांश भाग को अर्मगनेक्स फ्रांसीसी लोगों ने नष्ट कर डाला। १५०० ई० में अल्सेस प्रान्त के अन्दर दूसरे योरुपीय देशों की भांति अराजकता का प्रचार था। १५०३ से १५१३ तक अल्सेस में विप्लव लगातार होता रहा।

उस के बाद लूथर के मत रिफार्मेशन का प्रचार हुआ। इस मत का स्ट्रासबर्ग और दूसरे अल्सेस नगरों में बड़ा स्वागत हुआ। १५२५ ई० में अल्सेस के लूथरेन लोगों ने बड़ा उपद्रव किया और मठों को जला दिया। उन्हें ऐंथनी लारेन के ड्यूक ने दबाया। स्ट्रासबर्ग नये धर्म का एक बड़ा केन्द्र बन गया था।

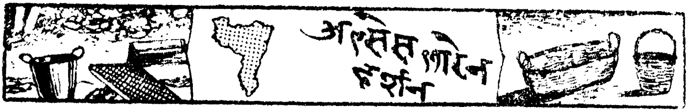
सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में फ्रांस तथा जर्मनी के बीच अल्सेस प्रान्त के सम्बन्ध में फिर युद्ध हुये।

फ्रान्स रोमन कैथलिक देश था परन्तु वहां के राजा अपने निजी स्वार्थ के कारण दूसरे देशों और मुख्य कर जर्मनी के प्रोटेस्टेंट लोगों से सहमत रहते थे।

१५५२ ई० में फ्रांस के राजा हेनरी द्वितीय अपनी सेना लेकर अल्सेस होकर गया। उसके बाद लगभग ५० साल तक जर्मनी और फ्रांस में बड़ा मेलजोल रहा। फ्रांस के ह्यूजनाट लोगों को अल्सेस में स्थान मिला था। १५७५ ई० में स्ट्रासबर्ग में १५३९८ फ्रांसीसी ह्यूजनाट फ्रांस के भागे हुये लोग थे।

धार्मिक युद्ध-काल में अल्सेस की दशा बड़ी शोचनीय थी। वहां होकर फ्रान्स से जर्मनी और स्पेन से निदरलैण्ड सेना आती जाती थी। वह वहां की प्रजा का सत्यानाश करती थी। तीस साल युद्ध के समय अल्सेस को बहुत हानि उठानी पड़ी। इस काल में अलसेस की आधी प्रजा मारी गई और वहां के उपजाऊ भूमि का अधिकांश भाग परती पड़ गया।

फ्रांस के राजा लूई चौदहवें ने प्रोटेस्टेण्ट लोगों की सहायता की थी। इसलिये वेस्टफीलिया की संधि में सम्राट फर्डिनेन्ड ने उसे अलसेस प्रान्त दिया। इस



प्रकार अलसेस फ्रांस के हाथ गया। लूई ने अलसेस प्रान्त के निवासियों को फ्रान्सीसी बनाने का भरसक प्रयत्न किया।

लूई ने चैम्बर्स डे रि यूनियन नामक कचहरी की सहायता से अल्सेस के दस स्वतंत्र नगरों पर भी अधिकार जमा लिया। वहां पर फ्रान्सीसी सैनिकों का अधिकार हो गया। १६८१ ई० में उसने अपनी सेना की सहायता से स्ट्रासबर्ग पर भी अधिकार कर लिया। फ्रान्सीसी शासन काल में अलसेस का शासन इन्टेन्डेन्ट नामक अफसर करते थे। अठारहवीं सदी के मध्य में अलसेस पर आस्ट्रिया, बड़े पोडरिक और फ्रान्स ने बारी बारी से आक्रमण किये। फ्रान्सीसी शासनकाल से अलसेस के लोगों को जबरदस्ती रोमन कैथलिक बनाया गया। बहुत से लोगों को फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

१७८७ ई० में अलसेस को अपनी स्वयम् पार्लिया-मेन्ट बुलाने की आज्ञा दी गई। १७८९ ई० में वहां से २४ डेपुटी वर्साई के स्टेटस जनरल की सभा में गये। १७९० ई० में अल्सेस फ्रान्स की भांति कई विभागों में बांट दिया गया।

अप्रैल १७६२ ई० में फ्रांस ने आस्ट्रिया पर युद्ध घोषणा किया। १७६३ ई० में मित्र सेनाओं ने अलसेस पर आक्रमण किया। नैपोलियानिक काल में अलसेस की दशा अच्छी रही। १७६७ ई० में मुलहाउस नगर अलसेस में मिलाया गया।

१८१३ ई० में अलसेस प्रान्त पर आस्ट्रिया ने अधिकार जमा लिया। उसके बाद जर्मन लोगों ने उसे अपनाने की मांग पेश किया। परन्तु यह उन्हें दिया नहीं गया। अलसेस निवासी मित्र राष्ट्रों अथवा बर्बन वंश के राजाओं को नहीं चाहते थे। १८१५ ई० से १८३० तक में अलसेस के अन्दर कई विद्रोह हुये।

लूई फिलिप के काल में १८३० ई० के पश्चात् भी विद्रोह हुये परन्तु धीरे धीरे वह शान्त हो गये। १८४० और १८७० ई० तक अलसेस धनी तथा शान्त बना रहा। उस समय उसकी उन्नति हुई और रेलवे तथा सड़कें बनाई गईं। इन ४० वर्षों के अन्दर वहाँ के निवासी अपने रीति-रिवाजों में अधिक फ्रान्सीसी हो गये थे। १८७० ई० में फ्रैंको-प्रूशन युद्ध का आरम्भ हुआ।



लारेन का इतिहास

अलसेस की भांति लारेन प्रान्त में भी मानव जाति पूर्व ऐतिहासिक काल में बसी थी। प्राचीन तथा नवीन प्रस्तर कालीन चिन्ह वहां पर पाये जाते हैं। सिक्के तथा और दूसरे सामान प्राचीन काल के मिलते हैं जिससे उस काल के इतिहास तथा सभ्यता का ज्ञान प्राप्त होता है।

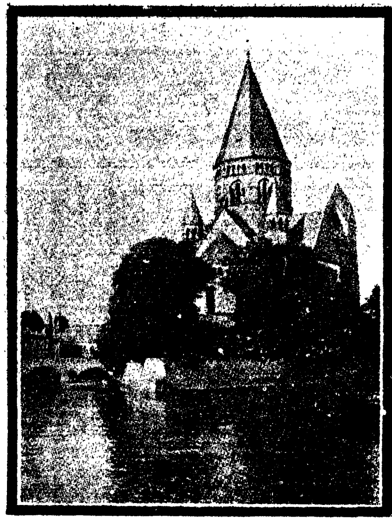
ईसा के जन्म के समय लारेन में वाल्टिक जाति के लोग रहते थे परन्तु कुछ भाग में जर्मन अथवा ट्यूटानिक लोग रहते थे। लारेन निवासी केल्ट तथा ट्यूटानिक जाति के मिश्रित लोग हैं। जब रोमन लोग लारेन आये तो उन्होंने उसे अपने साम्राज्य का एक भाग बनाया। ३०० ई० में लारेन में ईसाई धर्म का प्रचार हुआ और मेज़ नगर विशप की राजधानी हो गई थी। रोमन लोगों के शासन के पश्चात् लारेन पर फ्रैंक लोगों का शासन आरम्भ हुआ। ५११ ई० में राजा क्लोविस के मरने पर उसका राज्य पुत्रों ने आपस में बांट लिया। लारेन आस्ट्रिया या फ्रैंक लोगों के पूर्वी राज्य में शामिल

किया गया। उस काल में लारेन की अच्छी उन्नति हुई और मेज़ एक प्रसिद्ध नगर हो गया।

८५५ ई० में लारेन का शासन लोथअर राजा करता था। वह लूई का पुत्र और चार्लमैन का पौत्र था। लोथअर के पश्चात् उसका पुत्र लोथअर राजा हुआ उसी के नाम पर राज्य का नाम लोथेरिञ्जिया या लारेन पड़ा।

लोथअर की मृत्यु पर उसका राज्य चार्लिसबाल्ड और लूई जर्मन ने बांट लिया। उस समय फ्रैंक साम्राज्य टूट रहा था। उत्साही पुरुष प्रत्येक स्थान पर अपना सिक्का जमाने का प्रयत्न करने लगे। उसी समय आर्नुफ नामक व्यक्ति ने बर्गन्डी के सडोर्फ नामक राजा को हराया और लारेन को अपने जर्मन राज्य में शामिल कर लिया। कुछ वर्षों के पश्चात् उसने इसे अपने पुत्र ज्वेनटी बोल्ड को दे दिया।

८९५ ई० तक पूर्वी तथा पश्चिमी फ्रैंक राज्य बिलकुल अलग हो गये थे और फ्रांस तथा जर्मनी दो स्वतन्त्र राज्य एक दूसरे के विरुद्ध स्थापित हो गये थे। दोनों राज्य लारेन पर अपना अपना अधिकार जमाना

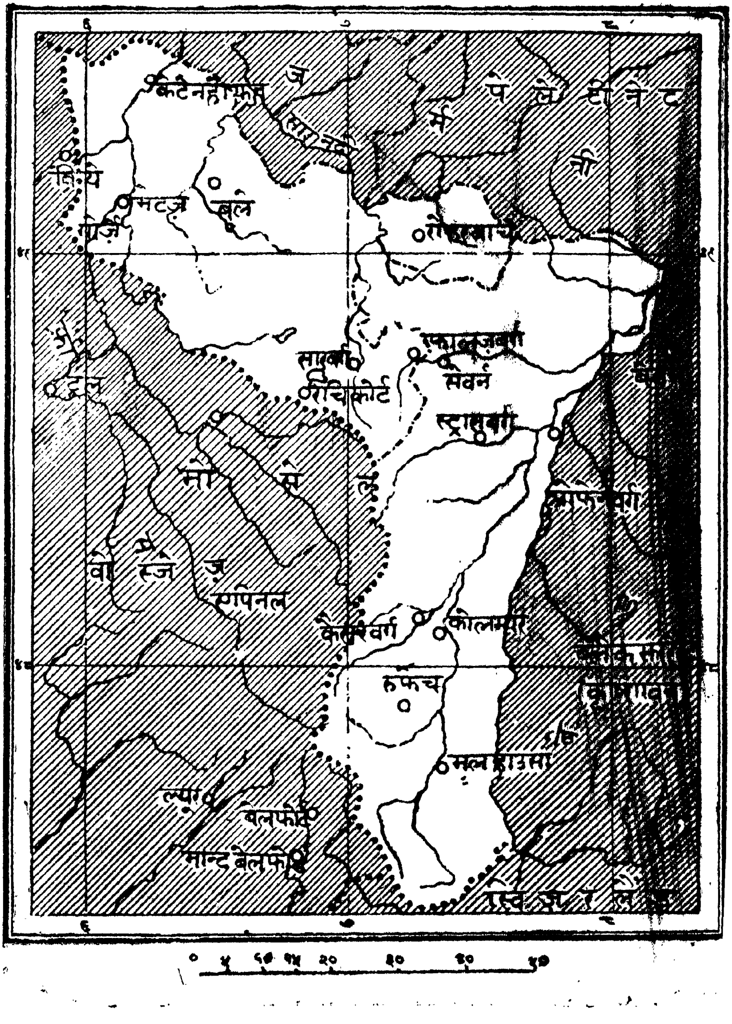


१—मेज का लूथरेन गिरजाघर १८७० ई० के फ्रैंको-प्रूशन युद्ध के बाद अल्सेस-लारेन के जो प्रान्त फ्रांस से अलग कर दिये गये थे वह वर्साई की संधि के अनुसार फिर फ्रान्स को लौटा दिये गये। मेज़ पहले लारेन की राजधानी थी वह अब मासेल विभाग की राजधानी है।



२—डेजीले की नहर, स्ट्रासबर्ग अल्सेस लोरेन की राजधानी, यह दो छोटी नदियां इल और ब्रूस्च के संगम पर है जो शहर से दो मील की दूरी पर है। यह एक रोमन कालीन नगर है। नगर के अन्दर मध्य कालीन कई एक सुन्दर भवन हैं जो काल की प्रतिभा की याद दिलाती हैं।

अलसेस - लोरन



चाहते थे। लूई के मरने के बाद ९१२ ई० में फ्रांस का राजा चार्लस लारेन का राजा हुआ।

९१९ ई० में जर्मनी का राजा हेनरी फाउलर बना। ९२१ ई० में उसने चार्ल्स से संधि किया और लारेन को उसी के अधिकार में छोड़ दिया। उसके बाद लारेन पर मेगायर (माजार) और नार्मन लोगों ने धावा मारा। उन्होंने घर द्वार उजाड़ दिये, चर्चों तथा मठों को जला दिया और नाज को नष्ट कर डाला। बहुत से लोग भूखों मर गये, कितने ही लोग मारे गये और कितने ही लोगों को जंगली आक्रमणकारी लोग उठा ले गये। जर्मन अथवा फ्रांसीसी कोई भी राजा लारेन निवासियों को शान्ति प्रदान न कर सके।

जिस्लेबर्ट नामक व्यक्ति ने विद्रोह के समय एक बड़ा भाग लिया था। वह ९१६ ई० में लारेन का ड्यूक बन बैठा। हेनरी फाउलर ने जिस्लेबर्ट को मिलाने के ध्यान से अपनी पुत्री का ब्याह उसके साथ कर दिया। इस प्रकार लारेन फिर से जर्मनी के अधिकार में हो गया।

लारेन के फ्रेड्रिक और गाड फ्रे दोनों ड्यूक

बहुत दिनों तक एक दूसरे से लड़ते रहे। उनके उत्तराधिकारी लोग भी उन्हीं की भांति एक दूसरे से लड़ते रहे। १०६५ ई० के कुछ वर्षों के पश्चात् लोअर (निचले) लारेन का नाम मिट गया और केवल अपर (ऊपरी) लारेन शेष रह गया जो लारेन के नाम से प्रसिद्ध है। लारेन के ड्यूक फ्रेड्रिक के पुत्र का नाम थियोडारिक था। सम्राट हेनरी द्वितोय के साथ थियोडोरिक ने मेट्ज़ नगर के सम्बन्ध में युद्ध किया था। १०२६ ई० में थियोडोरिक की मृत्यु हो गई। उसके बाद सम्राट ने लारेन को अल्सेस के अल्बर्ट को दे दिया। अल्बर्ट के बाद उसका भाई जिरार्ड ड्यूक हुआ। जिरार्ड के वंशज लारेन के ड्यूक कई सौ वर्षों तक रहे। लारेन के ड्यूकों, बार के काउंट तथा मेट नगर के बिशप और चम्पाने के काउंट से बहुधा झगड़ा होता था।

ड्यूक थिबाट या थियोबोल्ड सम्राट फ्रेड्रिक द्वितीय का शत्रु बन गया था। इसलिये थिबाट को हटाने के लिये सम्राट ने थिबाट के शत्रुओं को मिला लिया और लारेन पर सैनिकों का आक्रमण हो गया। आखिरकार थिबाट को स्वीकार करना पड़ा कि चम्पाने के काउंट



का दास है। थिबाट की मृत्यु के पश्चात् उसके अधिकार ड्यूकों ने सम्राट अथवा किसी दूसरे ड्यूक की दासता स्वीकार नहीं की।

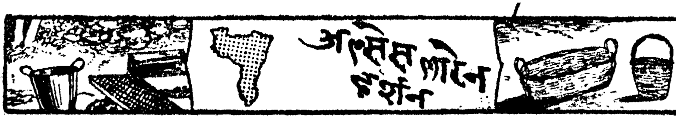
१४३१ ई० में ड्यूक चार्ल्स (जिसे बाल्ड कहते थे) ने मृत्यु-पत्र द्वारा अपनी अभिलाषा प्रकट किया कि उसकी सम्पत्ति तथा भूमि उसकी पुत्री को दे दिया जाय। उसकी पुत्री का नाम ईसाबेला था। चार्ल्स का भतीजा ईसाबेला और आँजू का विरोधी था। अंथनी का कथन था कि नियमानुसार कोई भी स्त्री गद्दी की मालिक नहीं हो सकती और चूँकि पुरुष नातेदारों में वह सब से अधिक समीपवर्ती था। इसलिये वही गद्दी का अधिकारी था।

रेने ने फ्रान्स के राजा से सहायता ली तो भी अंथनी ने उसे हराया और कारागार में डाल दिया। जब अंथनी को २ लाख क्राऊन मुद्रा प्राप्त हुये तो उसने लारेन की डची रेने को लौटा दिया। १४४४ ई० में रेने की बड़ी पुत्री योलान्दे का व्याह अंथनी के पुत्र फेरी से हुआ। १४७३ ई० में लारेन और बार की राजगद्दी के बारे में फिर कुछ झगड़ा हुआ। १५०८ ई०

में लारेन का ड्यूक अंथनी गुड (अच्छा) बना। १५२५ ई० में उसने अलसेस के विद्रोहियों को दबाया।

ड्यूक अंथनी के समय फ्रांस और जर्मनी अपने लम्बे युद्ध का आरम्भ कर रहे थे। यही युद्ध वाटरलू के युद्ध तक चला था। १५४२ ई० में अंथनी ने जर्मन डाएट को फुसलाया कि वह लारेन प्रान्त को स्वतंत्र कर दे।

चार्ल्स पञ्चम ने इस बात को स्वीकार कर लिया और लारेन स्वतंत्र हो गया। फिर भी वहाँ जर्मन तथा फ्रान्सीसी सैनिकों का आना जाना बना रहा और तीन प्रसिद्ध बिशप वाले नगर (मेट्ज़, टूल, वर्डून) लारेन के लिये कष्टदायक नगर बने रहे।



अलसेस की प्रजा

यह सीमावर्ती प्राचीन ऊँचे पर्वतों का देश है इसलिये आधुनिक वैज्ञानिक संसार में भाग लेते हुये भी यहां प्राचीन रीति-रिवाज पाये जाते हैं। अलसेस के निवासियों के अन्दर प्रान्तीयता का भाव बहुत पाया जाता है।

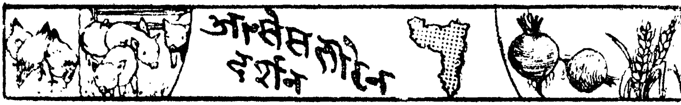
मध्य कालीन, आदि ईसाई तथा प्राचीन काल के रीति-रिवाजों और कहानियों के कारण अल्सेस के लोगों के चाल-चलन के अन्दर कल्पित भाव आ गया है। अल्सेस निवासियों के अन्दर निजी वाद की अधिकता है। ओस्लेज का निवासी प्राचीन कहानियों के सुनने का बड़ा शौकीन होता है परन्तु वह उससे कोई अर्थ नहीं निकालता है। अल्सेस निवासी लोग जब वादाविवाद में फँस जाते हैं और उनके भीतर किसी प्रकार के भाव उत्पन्न हो जाते हैं तो वह बड़ी बातें करते हैं। वह किसी से जल्दी मित्रता अथवा शत्रुता नहीं करते हैं परन्तु यदि एक बार किसी से मित्रता अथवा शत्रुता हो गई तो वह उसका समस्त जीवन ध्यान रखते हैं।

अल्सेस निवासी बड़े कठिन व्रतधारी होते हैं। जब अल्सेस लारेन प्रान्त को फ्रान्स ने जर्मनी को दे दिया था और तीन लाख फ्रान्सीसी फ्रान्स चले गये थे तो भी जार्जजवेबर ऐसे भूमिपति कठिन व्रतधारी थे जिन्होंने पेरिस को अपना निवास-स्थान बनाया था और अपनी सम्पत्ति अल्सेस में रख छोड़ी थी। उसका कहना था कि अपनी आन पर डटे रहो वह दिन आवेगा जब कि अल्सेस जर्मन शासन से अलग होगा।

अल्सेस निवासी धार्मिक मामलों में बहुधा त्रुटि करते हुये देखे गये हैं। वह दिल्लगी करना बहुत पसंद करते हैं। वह स्वतंत्रता पूर्वक दिल्लगी करते तथा अपने धार्मिक प्राचीन विश्वास का खुले तौर पर वर्णन करते हैं। वह अजनबी तथा मित्र दोनों के साथ स्वतंत्रता-पूर्वक बातचीत करते हैं।

अल्सेस के एक मनुष्य के स्वतंत्र भाषण के सम्बन्ध में एक कहानी है।

रैप नामक अल्सेस निवासी नैपोलियन प्रथम का आज्ञाकारी सहकारी था। एक दिन रैप कोर्सिका के आये हुये कुछ लोगों को अपनी ड्यूटी पर खड़ा हुआ शिक्षा



दे रहा था। नेपोलियन ने उसे इशारा किया कि वह खामोश हो कर वहां से हट जावे तो भी रैप दालान में डटा रहा। सभासदों के चले जाने पर नैपोलियन ने पूछा कि तुम आज्ञा देने पर भी क्यों नहीं हटे थे। रैप ने उत्तर दिया "हुजूर देखिये यह सभी कोर्सिका निवासी बड़े बदमाश होते हैं।" उसके बाद जब सब लोग एक कमरे में गये तो रैप ने कहा मालूम होता है कि मैंने कुछ बेवकूफी के शब्द कहे हैं इसपर सावरी ने हँसते हुये कहा "तुम ऐसा कहने के लिये बिलकुल योग्य हो।"

भोजन करते समय बोनापार्ट ने अपनी स्त्री से कहा "क्या तुम जानती हो कि सभी कोर्सिका निवासी बद-माश होते हैं। इसके बाद नैपोलियन जोरों से हँसने लगा। रैप को कुछ परेशानी सी हुई। नैपोलियन ने उसके बाद रैप के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं किया।

इस छोटी कहानी से पता चलता है कि अल्सेस निवासी कितनी स्वतंत्रता के साथ बातें करते हैं नैपो-लियन कोर्सिका में रह चुका था फिर भी कोर्सिका निवासियों को बदमाश कहने में रैप कदापि नहीं झिझका।

देश दर्शन

हमारे भारतवर्ष तथा और दूसरे प्राचीन देशों की भांति अल्सेस निवासी आग के समीप बैठ कर कहानियों के कहने के बड़े उत्साही होते हैं। वह बन के रहने वाले मिट्टी के छोटे मनुष्य तथा स्त्री आदि का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि वह भूले भटके यात्रियों की सहायता बन में करते हैं और भूले बच्चों को खतरे से बचाते हैं। पहले यह जीवधारी खेत के कामों और घर के कामों में सहायता किया करते थे परन्तु अब गांवों तथा नगरों के अन्दर रात को तभी आते हैं जब कभी कोई न कोई अभाग्य की बात होने वाली होती है और मृत्यु की सम्भावना होती है।

अल्सेस निवासियों के विश्वास के अनुसार बन के अन्दर भांति भांति के कल्पित जीवधारी तथा चुड़ैल आदि रहती हैं जो यात्रियों की सहायता करती हैं। बौने, श्वेत बिल्लियाँ, भेड़िये आदि भी बनों में रहते हैं। वहाँ पर एक बड़ा राक्षस रहता है जिसकी पूँछ चाँदी की होती है। वह सोने वाले का सीना चूस लेता है। अलसेस निवासी चुड़ैलों से बहुत डरा करते हैं।

अलसेस के लोग बतख, जिहवा, पेट, झींगा मछली

और छोटी चिड़िया आदि बहुत चाव से खाते हैं। साधारण लोग पोर्क मछली बहुत खाते हैं। यहाँ मछली सैकड़ों तरह से तयार की जाती है। समूचा भी भोजन के लिये दिया जाता है। करमकल्ला की तरकारी भी खूब चाव से खाई जाती हैं.

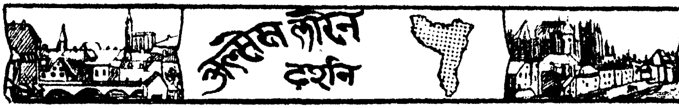
वहां पर भोज में अधिकतर पालतू तथा बनैले सुअर का मांस अवश्य भोजन के लिये दिया जाता है।

देहात के लोगों का जीवन शहरी लोगों से बड़ा भिन्न है। वह लोग अधिक परिश्रमी होते हैं उनका जीवन नागरिक लोगों से अधिक कठिन होता है वह लोग अधिक सादे होते हैं।

गाँवों के लोग ग्यारह बजे दोपहर को भोजन करते हैं। यदि घर के बाहर कोई कार्य नहीं होता है तो सभी प्रकार के लोग अपने घरों में एक मेज के चारों ओर भोजन के लिये बैठ जाते हैं। मेज के सिरे पर घर का मालिक किसान बैठता है उसके दाहिनी ओर किसान का बाप और बाईं ओर उसका बड़ा पुत्र बैठता है। किसान के पिता के दाहिनी ओर उसकी माता उसके

बाद किसान की स्त्री उसकी लड़कियाँ, नौकर लड़कियाँ और बच्चों की दाई आदि बैठती हैं। सामने दूसरी ओर बड़े पुत्र से नीचे वाले मर्द लोग बैठते हैं। एक बड़ी थाली में माँस तथा तरकारी चारों ओर घुमाई जाती है। और लोग बारी बारी से खाते हैं उसके मेज पर केवल एक प्याला शराब पीने के लिये होता है। सबसे पहिले किसान का पिता, फिर किसान, उसके बाद उसका बड़ा पुत्र और फिर बारी बारी से सभी लोग पीते हैं। पीने के पश्चात् प्याला किसान के पास फिर पहुँचा दिया जाता है।

अल्सेस की मदिरा चारों ओर प्रसिद्ध थी। अंगूर तथा शराब के कारण ही लोई चौदहवें ने इस प्रान्त पर विजय प्राप्त की थी। शराब पीने के लिये भांति भांति की कहावतें हैं। भिन्न प्रकार की मदिरा पीने के लिये मिट्टी, लकड़ी शीशा, चांदी आदि के प्याले होने चाहिये तभी मदिरा पीने का मज़ा मिलता है। वहां पर एक खास तरह की मदिरा होती है जो सोने के प्याले में ही पीने से पूर्ण आनन्द देती है। इस सम्बन्ध में एक कहावत है "जिस किसी ने पूरा घूँट नहीं पिया वह



ईमानदार नहीं है।" एक दूसरी कहावत है कि "एक प्याले पर एक टुकड़े (एक प्रकार की मुद्रा) और एक अंडे पर दो टुकड़े खर्च करने पड़ते हैं।

देहात के अन्दर उत्सव बड़े आनन्द के साथ मनाये जाते हैं। देहाती लड़कियों के व्याह के समय गांव के लोग कन्या के घर पर बड़े प्रातः काल ही पहुँचते हैं और उसे जगा कर स्नान आदि कराकर सुन्दर वस्त्र पहिनाते हैं। उसके सिर पर नारंगी के पुष्प का मुकुट रक्खा जाता है। एक गाड़ी पर कन्या के पहिनने, सोने तथा उठने वैठने का सामान लादा जाता है। गाड़ी भली भांति सजाई जाती है। वर का गाने वजाने तथा बन्दूक की सलामी के साथ स्वागत किया जाता है। वर के पहुँच जाने पर समस्त भीड़ उसका अभिवादन करती है और फिर रोटी तथा शराब चारों ओर घुमाई जाती है। उसके पश्चात् व्याह का जुलूस गिरजा घर जाता है। सभी गांव वाले गिरजा घर के अन्दर व्याह संस्कार देखने जाते हैं। कन्या को पहले से सचेत कर दिया जाता है कि जब वर अँगूठी पहिनाने लगे तो वह अपनी अँगुली टेढ़ी कर ले जिससे वह सरलता के साथ अँगूठी

न पहिना सके नहीं तो वर सदैव कन्या का मालिक बना रहेगा। वर को भी चेतावनी दे दी जाती है कि अँगूठी पहिनाते समय यदि कन्या अँगुली टेढ़ी करती है तो वह अपने पैर से उसके पैर के अँगूठे पर ठप्पा अवश्य लगा दे नहीं तो वह जीवन भर उसका गुलाम बना रहेगा।

ब्याह हो जाने के पश्चात् सभी लोग लौट जाते हैं और प्रेम भोज में शामिल हो जाते हैं। सभी एक दूसरे का आलिंगन करते, शराब पीते तथा बधाई देते हैं। भोज लगभग दो घंटे तक होता है। भोज के समाप्त हो जाने पर गाना बजाना आरम्भ होता है जो लगभग आधी रात तक रहता है। वर तथा कन्या उसके बाद एक जुलूस में वर के घर ले जाये जाते हैं। उनके जाते समय खुशी के साथ उनकी विदाई की जाती है।

बच्चों के लिये अल्सेस में वर्ष में क्रिस्टकिंडेल तथा हैन्सट्रैप नामक दो उत्सव के दिन होते हैं। प्रथम त्योहार में अच्छे बच्चों को सौगात मिलते हैं और दूसरे अवसर पर उन्हें भयभीत करने के लिये एक राक्षस आता है। राक्षस का नाम हैन्सट्रैप है। यह खाल पहिने होता है,

सिर पर फर की टोपी तथा सींगें होती हैं, दाढ़ी लाल रहती है। उसके कमर तथा सीने में चारों ओर जंजीर रहती है। वह हाथ में लाठी लिये रहता है और बच्चों को भय दिखलाता है।

हैन्सट्रैप किसी समय में पैलेटाइन का एलेक्टर था वह सभी नागरिकों तथा यात्रियों को बड़ा कष्ट देता था इसी कारण लोग उसका नाम लेकर बच्चों को डरवाते थे। अब उसी की स्मृति में एक दिन उसका स्वांग भर कर बच्चों को भयभीत करने का उत्सव मनाया जाता है।

अल्सेस में सारस पक्षी का बड़ा मान है। बहुत लोगों का कहना है कि वह फ्रान्सीसी भाषा बोलता है अथवा बोलने का प्रयत्न करता है। लोगों का यह भी कहना है कि जब वहां जर्मन अधिकार रहा तो सारस पक्षियों की गणना भी वहां बहुत कम हो गई थी। यह पक्षी शुभ माना जाता है। यह लोगों को सौभाग्य की सूचना तथा बाल बच्चे देता है। पहले लोग इसका इतना आदर करते थे कि जहाँ पर यह अपना निवास-स्थान

बना लेता था लोग उसे वहाँ से हटाना पाप समझते थे। एक बार एक बड़े कारखाने के मालिक ने अपना कारखाना बन्द कर दिया। एक सारस ने वहाँ चिमनी में घोंसला बना लिया। जब कारखाना को दोबारा चलाया गया तो सारस को कष्ट न देकर दूसरी चिमनी बनाई गई थी। अवश्य ही उस कारखाने के मालिक का रोज़गार में बड़ा लाभ हुआ था।





लारेन के निवासी

लारेन प्रान्त के लोगों का राष्ट्रीय चाल चलन वहां की जाति तथा ऐतिहासिक घटनाओं पर निर्भर है। यह सीमावर्ती प्रान्त दो शत्रु जातियों के मध्य में स्थित होने के कारण अगणित युद्ध का क्षेत्र बनता रहा है। चार्ल्स चतुर्थ के समय लारेन में इतना युद्ध हुआ कि वहां की ४ लाख प्रजा में ३ लाख प्रजा मार डाली गई थी। मारिस वारेस तथा जार्जेज डकरोक ने लारेन के देहाती जीवन पर पुस्तकें लिखी हैं। लारेन के निवासी बड़े धीर प्रकृति के होते हैं।

जब १८७१ ई० में समस्त अल्सेस प्रूशा में मिला दिया गया था तो पश्चिमी लारेन, मोसेले और उसकी सहायक नदियों की घाटियां और अपर मोसेल फ्रान्स के अधिकार में ही छोड़ दिये गये थे। गत महायुद्ध में नैन्सी राजधानी ने डटकर जर्मन आक्रमण का सामना किया था। मेंज़ नगर लारेन का दूसरा बड़ा नगर है। यहाँ एक दृढ़ दुर्ग है।

फ्रान्सीसी तथा जर्मन लारेन के मध्य में पहाड़ियों

की सीमा नहीं है। मेज़ से दक्षिण और दक्षिण-पूर्व बन, खेत, अंगूर के बाग और दूसरी वाटिकाएँ हैं। नगर तथा गांव बीच बीच में बसे हैं कुछ दूर तक सीले नदी सीमा बनाती है फ्रान्स में मिलाये जाने के कारण सीमा के बहुत से पूर्वी गावों को बहुत हानि हुई। सीले नदी के एक ओर के निवासी दूसरी ओर के अपने रिश्तेदार निवासियों से सम्बन्ध नहीं कर सकते थे।

मोसेल और म्यूर्थे की घाटियां बड़ी सुन्दर हैं। निचली पहाड़ियां बड़ी हरी भरी हैं और जल विभाजक का काम करती हैं। उन पर विकट बन है और उनके बीच बीच में सुन्दर घाटियां हैं। बड़े मैदान धनी तथा उपजाऊ हैं। उनमें खेतों तथा चराई के बड़े बड़े मैदान हैं। बागों तथा कुंजों के बीच बीच में लाल छत वाले घर दिखाई पड़ते हैं वहां का जीवन बड़ा शान्तिमय है। वहाँ पर सीज़र के समय के गाँव अब तक वर्तमान हैं और कम परिवर्तन हुआ है वहां की लिपि कई प्रकार की है। अल्सेस की भांति लारेन में भी अंधविश्वास तथा प्राचीन कहानियाँ प्रचलित हैं। यदि कोई बालक अधिक सुस्त होता है तो माता खेत के अन्दर बाहर सोने वाले बालक



को एक अजीब पशु के भूत के कूदने और सुस्त बनाने का समाचार बता कर रहती है।

लारेन में बहुत से रीति-रिवाज अब भी प्राचीन ढंग पर मनाये जाते हैं। नीचे गांव के एक त्योहार के सम्बन्ध में एक कहानी दी जाती है।

फेटेदिवस के दिन गिरजा घर के अंतिम घंटे के बजने पर गांव के लड़के और लड़कियां सुन्दर वस्त्र पहिन कर गिरजाघर की ओर जाते हैं। गिरजाघर का पादरी स्वतंत्रतापूर्वक कुछ भी कह अथवा कर सकता है। गिरजाघर के अन्दर गाने की ध्वनि से दीवारें हिलने लगती हैं। सैनिक लोग जो छुट्टी पर रहते हैं। बड़े ऊँचे स्वर से गाते हैं और जब विलम्ब से आने वाले लोग पहुँचते हैं तो वह हाथ की कुहनी से एक दूसरे को धक्का देकर उसका उपहास करते हैं।

पादरी अपने गिरजाघर के उस दिन के संस्कार को शीघ्र ही समाप्त करने का प्रयत्न करता है। प्रार्थना समाप्त हो जाने पर छोटी लड़कियां त्योहार की रोटियां पादरी को देती हैं। पादरी उन्हें आशीर्वाद देता है। उसके बाद तीन लड़के आते हैं और उस रोटी को लोगों

के मध्य बांटते हैं। लोग बेंचों के ऊपर बैठे रहते हैं। वह ईसा के फाँसी के चिन्ह पर फल-फूल चढ़ाते हैं। तीनों लड़के दौड़ दौड़ कर लोगों को प्रसाद बाँटते हैं।

जब चर्च में यह संस्कार होता रहता है तो गाँव के अन्दर बिलकुल शान्ति छाई रहती है। घर के द्वार तथा खिड़कियां बन्द रहती हैं। सड़कें खाली रहती हैं केवल घर की चिमनियों से धुवाँ निकलता रहता है और कुत्ते इधर उधर भोजन की बास सूंघते दिखाई पड़ते हैं।

संस्कार के समाप्त होने पर भीड़ गिरजाघर के बाहर आती है। चारों ओर घोड़ों की टापें तथा गाड़ी के पहियों की घड़घड़ाहट गूँजने लगती है। त्योहार मनाने के लिये पास पड़ोस के गांव के लोग अधिक से अधिक संख्या में आते हैं। लोग बच्चों को छीन छीन कर उन्हें प्यार करते तथा चूमते हैं।

दोपहर के बाद भोज होता है और लोग आनन्द मनाते हैं। लड़के लोग कमरे के अन्दर नाचते गाते और आनन्द उठाते हैं। बड़े बूढ़े उनके आनन्द का अवलोकन करते हैं। उस समय प्रत्येक लारेन निवासी प्रसन्न प्रतीत होता है।

दूसरे दिन ही खेल तमाशे का परिवर्तन हो जाता है और सदैव फेटे के पश्चात् गम्भीर प्रार्थना होती है। लोग काले वस्त्र पहिन कर (मृतक के लिये) फूल लेकर समाधि स्थल पर जाते हैं और मरे हुये लोगों के लिये प्रार्थना करते हैं। वह अपने मरे हुये लोगों को कभी नहीं भूलते हैं। स्त्रियाँ भी काले वस्त्र धारण किये रहती हैं। वह अजनबी के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और यदि फ्रान्सीसी भाषा का बोलने वाला हुआ तो और भी प्रसन्नता के साथ उससे मिलते हैं।

लारेन के गांव बड़े महत्व के होते हैं। प्रत्येक गांव में एक किला होता है जहां पर प्राचीन समय में गांव का मालिक (जागीरदार तथा ज़मींदार) रहा करते थे और वहीं से शासन करते थे। अब वह जागीरदार नहीं रह गये हैं वरन् उनके स्थान पर छोटे ज़मींदार हैं। जो उच्च वंश वाले हैं वह सेना, पार्लियामेन्ट और स्थानीय शासन में भाग लेते हैं। कुछ लोग पेरिस में जाकर रहते हैं।

नगर और गाँवों के बाहर बहुत कम घर देखने में आते हैं। झगड़े के समय में मित्रों से दूर रहना खतरे

की बात थी। इसी कारण मोसेलेन का मैदान बड़ा उजाड़ दिखाई पड़ता था परन्तु लोगों को आराम करने और प्रार्थना करने के लिये कहीं कहीं गिरजाघर बने हैं जहां पर लोग आराम कर सकते हैं।

सीले में एक ज़िला है जहाँ पर बहुत सी छोटी छोटी झीलें हैं। झीलों के अन्दर सिवार घास है। झीलों के अन्दर मछली तथा पानी की चिड़ियाँ बहुत हैं। जिनका लोग शिकार करते हैं। प्रत्येक बर्ष किसी न किसी झील का पानी निकाल दिया जाता है और फिर उसमें फसल बोई जाती है और अच्छी पैदावार होती है। फसल कटने के बाद पानी फिर भर दिया जाता है और मछली तथा चिड़ियां वहां पर फिर वापस आ जाती हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध तालुका लिंडे बासे का है। वहाँ पर प्राचीन गाँव तथा घरों के खंडहर हैं।

उत्तरी लारेन में १८७० ई० के युद्ध-क्षेत्र के क्रास (फांसी) चिन्हों की अनेकों स्मृतियां हैं। वहां पर फ्रान्सीसी लोगों का जीवन जर्मन शासन के समय बड़ा संकटमय था।

प्राचीन सीमा के सबसे पूर्वी कोण पर फाल्स बर्ग



नगर है। यह अल्सेस में सेवने से कुछ मील की दूरी पर है। इस नगर के समीपवर्ती कट्रे वेंट्स, बुचेलबर्ग और मिटेल बोर्न स्थान प्रसिद्ध हैं। यहां ऐतिहासिक स्थान हैं। वह एक प्रसिद्ध प्राचीन किला है और पुराने समय में वहां कई एक युद्ध हुये थे।

१८१४, १८१५, १८७० ई० के युद्ध में फाल्सबर्ग नगर ने अच्छा भाग लिया था। यह सचमुच ही आवश्यकता पड़ने पर सैनिक सेवा किया करते थे। लड़के खास तौर पर सैनिक का खेल खेला करते थे। फ्रान्सीसी साम्राज्य के समय वहां के खेलाड़ी लड़कों में से ११ जनरल बने और एक फ्रान्स का मार्शल बना। इस नगर की संख्या लगभग ४००० है।

डीडेन होफोन (थियोन विले या चैट्यू सालिंस) उत्तरी लारेन में है। यह नगर किसी समय में प्रशा के अफ़सरों का निवास स्थान था।

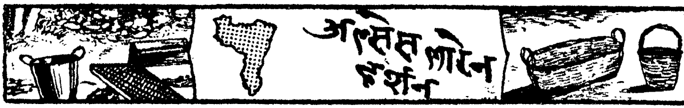
देश दर्शन

अल्सेस लारेन के नगर

अल्सेस लारेन नगरों का देश नहीं वरन् गाँवों का देश है फिर भी वहां पर कुछ स्थान इतने बड़े तथा आवश्यक हैं जिनका वर्णन करना आवश्यक है। इनमें स्ट्रासबर्ग, मूल हाउस, कोल्मार, मेज आदि हैं। वार्लेडक नगर फ्रान्सीसी लारेन में है।

स्ट्रासबर्ग अल्सेस की प्राचीन राजधानी तथा अल्सेस लारेन का मुख्य नगर है। यह राइन नदी के बाएँ किनारे पर अथवा इल और ब्रेयुस्थ के संगम पर स्थित है। नगर तथा उनके पड़ोस की भूमि चपटी है। जन संख्या लगभग ढाई लाख है।

प्राचीन काल में जब सेल्ट लोग संगम पर रहते थे और रोमन जाति ने उसे जीता तो उसकी किलेबन्दी किया और उसका नाम अर्जेनटोरेटम रक्खा। यह स्थान किले के लिये बहुत अच्छा था। इससे राइन नदी की देख भाल सरलता के साथ हो सकती थी। वहां पर एक सेना रख दी गई। धीरे धीरे उस स्थान की उन्नति हुई। चौथी सदी में वह विशप की राजधानी बन



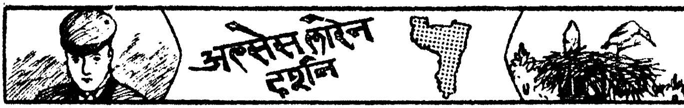
गया। रोमन साम्राज्य की अवनति के पश्चात् वहां पर एक अलेमानी का शासन रहा उसके बाद फैंक्स राज्य करते रहे जिन्हों ने नगर का वर्तमान नाम स्ट्रासबर्ग रक्खा। समय पाकर धीरे धीरे स्ट्रासबर्ग में और अधिक लोग जा बसे, व्यापार की उन्नति हुई, नागरिकों की अधिकता हुई जिसके कारण नगर में बाहरी लोग आने लगे। जब नगर अधिक धनी तथा व्यापारी हो गया तो उसका नाम चारों ओर प्रसिद्ध हो गया।

नगर का मुख्य व्यक्ति बिशप था जो वहां की प्रजा पर शासन करना चाहता था। वह अपने सहकारियों द्वारा कर वसूल करता था, अपराधियों को सजा देता था और जो कुछ चाहता था वह प्रजा से कराता था। कुछ समय तक यह बात जारी रही परन्तु जब नागरिक धनी हो गये तो स्वतंत्र बन गये और वह बिशप के शासन से घृणा करने लगे। नागरिकों ने बिशप के विरुद्ध आन्दोलन किया और दो तीन सौ साल तक वह बिशप से लड़ाई झगड़ा करते रहे।

बारहवीं सदी में जर्मनी के राज्य स्वाबिया के

फिलिप ने स्ट्रास बर्ग को एक स्वतंत्र नगर बना दिया इसके कारण मजिस्टेट लोग विशप या किसी बाहरी व्यक्ति की रोक के बिना ही अपने कर्तव्य का पालन करने लगे। स्ट्रास बर्ग का मुख्य मजिस्टेट वहां का छोटा राजा सा बन गया। नागरिक लोगों को ज्ञात हो गया कि वह नगर के अन्दर विशप और उसके नौकरों की सहायता के बिना ही अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। बिशप ने नागरिकों की इस स्वतंत्रता को स्वीकार नहीं किया और वह स्ट्रास बर्ग के कार्यों में रोक डालते ही रहे। नगर निवासियों के विशप का विरोध करने का निश्चय कियां। १२६२ ई० में नागरिकों तथा विशप के आदमियों में युद्ध हुआ जिसमें नागरिक लोगों की विजय हुई।

इस कष्ट से छुट्टी पाने के पश्चात् स्ट्रासबर्ग निवासी आपस में लड़ने झगड़ने लगे। मुख्य मजिस्टेट तथा कुछ और मनुष्यों ने सारा नगर का मामला अपने हाथों में रखने का निश्चय किया। जिसका विरोध शेष नगर निवासियों ने किया और इसी फलस्वरूप १३३८ ई० में एक छोटी क्रान्ति हुई। नगर की सरकार



में कुछ परिवर्तन हुआ जिसके कारण कुछ अधिक मनुष्यों ने सरकार के अन्दर भाग लिया।

स्ट्रासबर्ग नगर के चारों ओर एक दीवार बनी थी। पन्द्रहवीं, सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में स्ट्रास बर्ग नगर ने अच्छी उन्नति किया। वहां की जन-संख्या में भी वृद्धि हुई। चार्ल्स पञ्चम और प्रोटेस्टेंट के युद्ध में स्ट्रास बर्ग के सैनिक प्रोटेस्टेंट धर्म की ओर से लड़े। स्ट्रासबर्ग छपाई आदि के केन्द्रों में से एक है और वहाँ पर सर्व प्रथम छपने वाली पुस्तकें छपी थीं।

१५४७ ई० के पहले ही स्ट्रासबर्ग प्रोटेस्टेंट धर्म का केन्द्र बन गया था। फ्रान्स के समीप होने के कारण वहाँ पर फ्रान्स के हियूजोनाटस बहुधा आया जाया करते थे। तीस साला युद्ध में वहां के नागरिकों ने प्रोटेस्टेंट लोगों का साथ नहीं दिया। १६८१ ई० में लोई चौदहवें ने स्ट्रासबर्ग पर अधिकार जमा लिया परन्तु फ्रान्सीसी क्रान्ति तक वहां पर वहां की सरकार ही स्थापित रही और उसके अधिकांश अधिकार उसे प्राप्त रहे। फ्रान्सीसी क्रान्ति के पश्चात् वह स्वतंत्र नगर नहीं रह गया परन्तु फ्रान्स के अल्सेस प्रान्त की राजधानी

बनाया गया। १८७० ई० में जर्मन लोगों ने स्ट्रासवर्ग पर गोलाबारी किया और उस पर अधिकार जमा लिया, १८७१ की संधि के अनुसार स्ट्रासबर्ग जर्मनी को दे दिया गया।

स्ट्रासबर्ग का सब से सुन्दर प्राचीन भवन वहाँ का गिरजाघर है जिसका प्राचीन भाग ग्यारहवीं सदी का बना हुआ है। गोथिक भाग तेरहवीं और पश्चिमी भाग चौदहवीं सदी का बना हुआ है। वहां का दुर्ग ४६५ फुट ऊँचा है जो योरुप के उच्चतम दुर्गों में गिना जाता है। दूसरा प्राचीन गिरजाघर सेंट थामस का है। नगर का प्राचीन भाग मध्यकाल का बना है और अब भी वहाँ की सड़कें सकरी तथा कुढंगे रूप में बनी हैं।

नया भाग सुन्दर आधुनिक भवनों तथा सड़कों से सुसज्जित है। १८७१ ई० के समीप वहां का विश्व-विद्यालय तथा कैसर का महल बना था। कैसर महल कैसर प्लाज़ पर बना है। यह नगर के सबसे सुन्दर सड़क के चौरास्ते पर है महल के सामने वहां का पुस्तकालय तथा अल्सेस लारेन का असेम्बली घर बना है। होटल ड्यक कामर्स विशप का महल है। अब वहां

पर कला का कौतुकालय बना हुआ है। वहां का फ़ाऊन्टेन भी वर्णन योग्य है। अब नगर के चारों ओर की दीवार तथा क़िले गिरा दिये गये हैं।

नगर के अन्दर बहुत से कारख़ाने हैं जहां पर मदिरा, फ़ौलाद, साबुन, कागज़ और गाने बजाने के सामान तयार किये जाते हैं। राइन नदी पर घाट बने हैं जहाँ से हर समय सामान आता जाता रहता है।

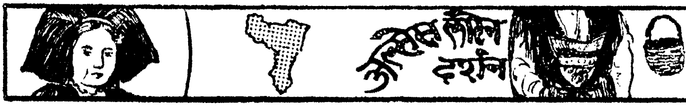
मूलहाउस भी एक प्राचीन नगर है। यह इल नदी और स्विटज़रलैंड की सीमा पर है। ११६८ ई० में यह एक स्वतन्त्र नगर बनाया गया था। १७६७ ई० में नगर ने अपने को फ़्रांस के साथ मिलने का अपना अधिकार बतलाया था। १८७१ ई० में अल्सेस की भाँति वह भी जर्मनी का हो गया था।

मूलहाउस की जन-संख्या एक लाख है। यहाँ पर सूती कपड़ा बहुत ज्यादा कारखानों में बनाया जाता है। नगर सूती कपड़े के कारखानों से भरा हुआ है। ऊनी कपड़ा, मशीनें, रसायन की वस्तुएँ आदि वहाँ तयार की जाती हैं। शराब, लकड़ी वहाँ से इल नदी तथा राइन-रोन नहर द्वारा बाहर भेजी जाती हैं। मूलहाउस

मजदूरों के लिये एक अच्छा नगर है। नगर के बाहर पोर्ट सन लाइट कलाकारों का स्थान है। वहाँ पर मध्य काल के टाऊन हाल, कुछ प्राचीन घर तथा सड़कें हैं।

कोलार स्ट्रासबर्ग से ४० मील की दूरी पर है। वहाँ पर मध्यकालीन भवन बहुत हैं। वहाँ पर मिन्स्टर, लूथरेन चर्च, ट्रेड हाल (व्यापारिक घर), घुमावदार सँकरी सड़कें हैं। नगर के अन्दर सूती, ऊनी तथा रेशमी कपड़े, चीनी, मशीन आदि के तयार करने के कारखाने हैं। नगर के चारों ओर अंगूर के खेत तथा वाटिकायें हैं।

६०० ई० के पहले यह एक बड़ा विख्यात नगर था। यह एक स्वतंत्र नगर था। १६३५ से १६४६ तक वहाँ पर फ्रांस का अधिकार रहा। १६७६ ई० में फ्रांस ने वहाँ पर फिर अधिकार जमाया और उसकी किलेबन्दी को तोड़ दिया। १८७१ ई० तक वह फ्रांस के अधिकार में रहा। कोलार में अल्सेस लारेन प्रान्त की सब से बड़ी अदालत थी।



स्ट्रासबर्ग से दस मील की दूरी पर हेगेनाउ एक छोटा नगर है। वहां पर कुछ गिरजाघर हैं। सूती, ऊनी कपड़े, मदिरा, चीनी के बर्तन आदि वहां तयार किये जाते हैं। पहले यह नगर बन के बीच में स्थित था इस लिये स्वाविया के ड्यूकों ने वहां पर शिकार खेलने का घर बनाया था। बाद को नगर के चारों ओर दीवार बना दी गई और फ्रैडरिक प्रथम ने वहां पर अपना महल बनाया जिसमें उसने अपना मुकुट और दूसरे खजाने के सामान रक्खे थे। १६४८ ई० में वहां पर फ्रांसीसियों का अधिकार हुआ।

अल्सेस के उत्तर में वीसेनवर्ग का छोटा नगर है। वहां पर एक सुन्दर गिरजाघर है जहां पर बेने डिक्टाइन साधुओं का स्थापित किया हुआ स्कूल था। चौदहवीं सदी में यह एक स्वतंत्र नगर बनाया गया।

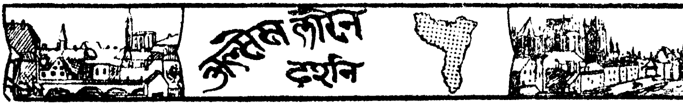
१८७१ ई० में जब लारेन के पूर्वी भाग पर जर्मनों का अधिकार हुआ तो उन्होंने मेज़ को लारेन की राजधानी बनाया। पहले वहां पर गाल और फिर रोमन अधिकार था। रोमन लोगों ने नगर की क़िलेबन्दी किया

और वहां से दूसरे नगरों को सड़कें बनाईं। मेज़ से बड़ून और स्ट्रासबर्ग को सड़कें जाती हैं।

मेज़ नगर की जनसंख्या लगभग एक लाख है। यह मोसले नदी पर स्थित है। वहां पर किला बना है। पहले वहाँ बिशप का, फिर फ्रैंक लोगों का राज्य था। तेरहवीं सदी में वह एक स्वतंत्र नगर बनाया गया था। १५५२ ई० में फ्रांसीसियों ने नगर पर अधिकार जमाया। १८७१ ई० में मेज़ नगर जर्मनी को दिया गया।

मेज़ नगर के गिरजाघर वर्णन करने योग्य हैं। पूर्व तथा पश्चिम के नगर द्वार देखने योग्य हैं। नगर के चारों ओर की दीवार गिरा दी गई है और जर्मन लोगों ने बहुत सी स्मृतियाँ तथा भवन तयार किये थे। मोसेल नदी में मेज़ नगर पर १४ पुल बने हैं।

मेज़ नगर सदैव से ही एक दुर्ग तथा सैनिक अड्डा रहा है। नगर के अन्दर लड़ाई का सामान, बूट जूते तथा हैट बनाये जाते हैं। मेज़ के साथ ही साथ टाउल और वर्दून नगरों का नाम आता है। मध्यकालीन समय में यह तीनों प्रसिद्ध नगर थे। यह तीन बिश्वरिक्स के नाम से प्रसिद्ध थे। १८७१ ई० मे मेज़ जर्मनी को दे



दिया गया और टाउल तथा वर्दून फ्रांस के हाथ में रहे। इन तीनों नगरों की किलेबन्दी की गई है।

टाउल मोसले नदी पर स्थित है। वह एक प्राचीन नगर है। पहले नगर पर रोमन, फिर फ्रैंक लोगों का अधिकार रहा। नगर निवासियों तथा बिशप के मध्य तीन सौ वर्षों तक लगातार युद्ध होता रहा। १५५२ ई० में हेनरी द्वितीय ने तीनों बिशप रिक्स पर अधिकार किया। १६४८ ई० में तीनों नगर फ्रान्स के हो गये। नगर के दो गिरजाघर प्रसिद्ध हैं उनमें से एक में होटल डेविले है। नगर की जन-संख्या १५ हज़ार है। नगर में मदिरा और चीनी के बर्तन तयार किये जाते हैं। टाउल एक सैनिक अड्डा है।

वर्दून नगर टाउल से कुछ बड़ा है। नगर म्यूज़ नदी पर स्थित है। टाउल से लगभग ५० मील उत्तर की ओर है। रोमन तथा फ्रैंक काल में वह एक प्रसिद्ध नगर था वर्दून नगर का इतिहास टाउल नगर से मिलता जुलता है। वर्दून में १६१४ ई० में भीषण युद्ध हुआ था।

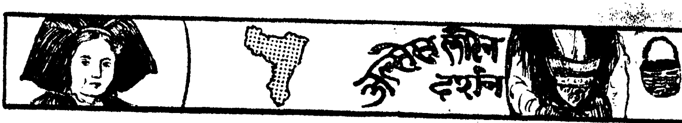
थियोनविले या डीडेन होफेन नगर मोसले नदी पर स्थित हैं और मेज़ से २२ मील की दूरी पर हैं।

१८७० ई० के पश्चात् जर्मन लोगों ने वहां किला बनवाया था। फ्रैंक राजा नगर में अपनी सभा किया करते थे। नगर के अन्दर रेलवे जंकशन, बाज़ार और किला है।

लारेन प्रान्त के आनन्द उठाने के लिये मनुष्यों को नैन्सी नगर का भ्रमण अवश्य करना चाहिये। नगर म्यूर्थे नदी पर संगम से ६ मील की दूरी पर स्थित है। यह एक बड़ा नगर है। नगर की जन-संख्या लगभग दो लाख है। बूट, जूते, तम्बाकू, हैट, ऊन, सूत की कताई बुनाई और शराब बनाने का काम होता है।

नैन्सी नगर का इतिहास बारहवीं सदी से आरम्भ होता है जब कि लारेन के ड्यूक ने उसे अपनी राजधानी बनाया और नगर के चारों ओर दीवार बनाई थी। १६३३ ई० में फ्रान्सीसियों ने नगर पर अधिकार जमाया था। आज तक नैन्सी नगर फ्रान्स का एक भाग बना है। १८७१ ई० के बाद बहुत से अल्सेस तथा लारेन निवासी जर्मन अधिकार किये हुये भाग को छोड़ नैन्सी में जा बसे थे।

नैन्सी नगर नये तथा प्राचीन दो भागों में बँटा है।



कार्डेलियर्स का गिरजाघर वहां के प्राचीन भवनों में से है। इस गिरजा घर को ड्यूक रेने ने बनवाया था। नगर के गिरजाघरों में लारेन के ड्यूकों के गुम्बद बने हैं।

ड्यूक स्टैनिस्लास ने नैन्सी नगर के अधिकांश सुन्दर भवन बनवाये थे। उसने नगर को योरुप के सुन्दर नगरों की भांति सजाया था। उसने नगर के अन्दर बहुत सी सड़कें तथा पार्क बनवाये थे। नगर को सजाने में स्टैनिस्लास ने बड़ा रुपया व्यय किया था। प्लेस स्टैनिस्लास तथा प्लेस डिलाएन्स नगर के प्रसिद्ध भवन हैं। स्टैनिस्लास ने अपने तथा बिशप के लिये नगर में महल बनवाये थे। उसी ने वहां का चर्च तथा लूई पन्द्रहवें की विजय का मेहराब बनवाया था। उसी का बोन्सेकोर्स गिरजाघर बनवाया हुआ है जिसके अन्दर वह गड़ा हुआ है। प्लेस स्टैनिस्लास में उसकी मूर्ति है। नवीन नगर के अन्दर बड़े बड़े कारखाने तथा गोदाम हैं।

बास्ले-डक नान की जन-संख्या लगभग २० हजार है। यह भी एक प्राचीन नगर है। यह नीचे तथा ऊँचे दो भागों में बँटा है। निचला भाग अर्नेन की छोटी नदी के ऊपर बसा है और ऊपरी दूसरा भाग पहाड़ी पर

स्थित है। ऊपरी नगर में संकरी सड़कें तथा बहुत से देखने योग्य प्राचीन घर हैं। वहाँ साधु पियर्स के गिरजाघर तथा क़िले के खँडहर भी हैं। १७१४ ई० में वृद्ध प्रेटेण्डर ने अपना दर्बार किया था जब कि वह फ्रांस से निकाला गया था। दर्बार में जैकोबाइट लोग आये थे और उन्होंने बूढ़े प्रेटेण्डर को अपना राजा स्वीकार किया था।

